21. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।

प्रस्तुत पाठ भवभूति-रचित 'उत्तररामचरितम्' से संपादित रूप में उद्धृत है। अयोध्या के राजा रामचंद्र के द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर छोड़ा गया घोड़ा जब वाल्मीकि के आश्रम के निकट पहुँचता है तो लव उसे अपने साथी बटुकों के साथ आश्रम की ओर ले जाता है। तभी लव को अनेकों सैनिकों के साथ युद्ध करते हुए देखकर रथारूढ़ चन्द्रकेतु लज्जा अनुभव करता है। चन्द्रकेतु लव से द्वन्द्व युद्ध के लिए कहता है। चन्द्रकेतु से आक्रमण के समय लव जृम्भकास्त्र का प्रयोग करता है। सारी सेना स्तब्ध रह जाती है। लव-चन्द्रकेतु परस्पर आत्मीयता के साथ देखते हैं। लव को पैदल देख चन्द्रकेतु भी रथ से युद्ध करने के लिए नीचे उतर आता है और कहता है कि यही न्याय है और यही रघुकुल की रीति है। वस्तुतः विशेष तेजस्वी बालकों के आगे बड़े-बड़े शूरवीर भी परास्त हो जाते हैं।

रथ+आरूढ़ः, युद्ध+आरंभः, न+अलम्, त्वर्यताम्=जल्दी कीजिए। एहि=आओ, अति+अद्भुतात्+असि, यत्+मम्, तत्+तव+एव ननु+एषः। दर्पनिकषः=घमंड की कसौटी, प्रसन्नकर्कशा=प्रसन्न और कठोर वचनों की उक्ति।

श्लोक : अत्यद्भुतात् ..... तव चन्द्रकेतुः।

अन्वयः अत्यद्भुतात् गुणातिशयात् अपि त्वम् मे प्रियः सखा असि, तस्मात् यत् मम तत् तव एव। तत् निजे परिजने किम् कदनम् करोषि? ननु एषः चन्द्रकेतुः तव दर्पनिकषः।

द्वितीयः एकांशः

चन्द्रकेतुः—हे हे राजाओ! असंख्य द्विरद (हाथी), तुरग (घोड़े) स्यन्दनथ=रथों से युक्त होकर कवच+आवृताः=कवच पहने हुए, एक पैदल (पदातौ) योद्धा पर एक साथ (युगपत्) जो युद्ध प्रारंभ किया है, वह तुम्हें और हमें धिक्कार है।

लवः स+उन्मादम्=व्यथित होकर, आः कथम् अनुकम्पते नाम? अच्छा, (भवतु) जृम्भकास्त्रेण (जृम्भकास्त्र से) तावत् सैन्यानि (सेना को) संस्तम्भयामि। (स्तम्भित करता हूँ) ऐसा कहकर लव जृम्भकास्त्र छोड़ता है।

उसके बाद 'सैन्यम् चित्रलिखितमिव अस्पन्दम् (चेष्टारहित) आस्ते।

अतः+अजितवीर्यं जृम्भकास्त्रम् एव इदम्। यह जृम्भकास्त्र तो अपराजयशक्ति वाला है।'

सुमंत्र : यह महान् अस्त्र इस बालक के पास कैसे आया?

चन्द्रकेतु : भगवान वाल्मीकि के पास से ही संभव है। (प्राचेतसात्)

समास : उन्माथेन सहितम् (सोन्माथम्), सम्भ्रमेण सहितम् (ससम्भ्रमम्), न जितं वीर्यं यस्य तत् (अजितवीर्यम्)

प्रकृतिप्रत्ययौ : विचिन्त्य = वि+चिन्त्+ल्यप्, प्रारब्धम् = प्र+आ+रभ्+क्त (नपुं.प्र.ए.क.), प्रशान्ताः = प्र+शम्+क्त (पुं. प्र. ब व.)

तृतीयः एकांशः

चन्द्रकेतुः लवः च ..... वीरचारित्रपद्धतिः।

प्रियं दर्शनं यस्य सः (प्रियदर्शनः)

अन्यः+अन्यम्, सस्नेह+अनुरागम्+स्नेहेन सहितम्, निर्वर्ण्य=देखकर

श्लोकान्वयः अहेतुः पक्षपातो ..... सीव्यति।

यः अहेतुः पक्षपातः तस्य प्रतिक्रिया नास्ति। सः स्नेहात्मकतन्तुः हि भूतानि अन्तः सीव्यति।

जिस प्रकार एक तन्तु (धागा) दो वस्त्र के खंडों को सीकर एक कर देता है उसी प्रकार लोग स्नेहात्मक तन्तु से जुड़े हुए परस्पर आकृष्ट होते हैं। जो बिना कारण के प्रेम होता है, उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं की जा सकती।

कुमारौ (चद्रकेतु-लव) दोनों एक-दूसरे को देखकर आलिंगनबद्ध होना चाहते हैं। फिर मृदुशरीरे=कोमल शरीर में बाण कैसे छोड़ें।

चंद्रकेतु : अवतरामि+आर्य। रथ से उतरता है। इससे वीर पुरुष का सम्मान और क्षत्रिय धर्म का पालन होता है।

प्रत्ययाः रथारूढ़ योद्धा को पैदल सैनिक से युद्ध नहीं करना चाहिए। रघुवंशी वीरों की यही आचार परंपरा है।

संग्राम + ठक् = (सांग्रामिक), मुच् + तव्यत् = (मोक्तव्याः), निर् + ईक्ष् + ल्यप् = (निरीक्ष्य), पूज+क्त = (पूजित)

समासः मृदु शरीरं तस्मिन् (कर्मधारयः), वीरः चासौ पुरुषः (कर्मधारयः)

प्रश्नाः

1. **चन्द्रकेतो : चरित्रचित्रणं प्रदत्त-बिन्दून् आधृत्य पञ्चवाक्येषु लिखत।**

   महान् वीरः, न्यायप्रियः, 'एकाकिनं' लवम् उद्दिश्य बहूनां युद्धारम्भ इति दृष्ट्वा लज्जते तस्य हृदयम्, तेजः तेजसि शाम्यते, दर्पनिकषः गुणप्रियः, आत्मीयता, वीरपुरुषः सम्माननीयः, क्षात्रधर्मस्य पालकः। लवं प्रति सहजस्नेहः, लक्ष्मणस्य पुत्रः

2. **प्रदत्तबिन्दून् आधृत्य लवस्य चरित्रचित्रणं कुरुत,** पराक्रमी, तेजस्वी, राज्ञः समस्तसैन्यदलम् अपि, पराजेतुं समर्थः, धीरोद्धतः, जृम्भकास्त्रप्रयोगे कुशलः, पदाति एव युध्यते, समस्तसैन्यानि सस्तम्भयति, आत्मीयताभावः, प्रियदर्शनः, सद्गुणस्य प्रशंसकः।

3. **अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदेषु संधिविच्छेदं कुरुत।**

   (क) प्रविशति <u>रथारूढः</u> चन्द्रकेतुः।

   (ख) सत्यम् ऐक्ष्वाकः <u>खल्वसि</u>।

   (ग) भगवतः <u>प्राचेतसादिति</u> मन्यामहे।

   (घ) तौ <u>अन्योन्यं</u> पश्यतः।

   (ङ) यं <u>निरीक्ष्यैव</u> आलिंगनस्य अभिलाषः उत्पद्यते।

4. **अधोलिखितपदानां विग्रहं समस्तपदं वा लिखत।**

   (क) सविस्मयम् = ...

   (ख) सूर्यकुलकुमारस्य = ...

   (ग) न जितं वीर्यं यस्य तस्य = ...

   (घ) प्रियं दर्शनं यस्य सः = ...

   (ङ) वीरपुरुषः = ...

   (च) महान्तौ बाहू यस्य तत्सम्बुद्धौ = ...